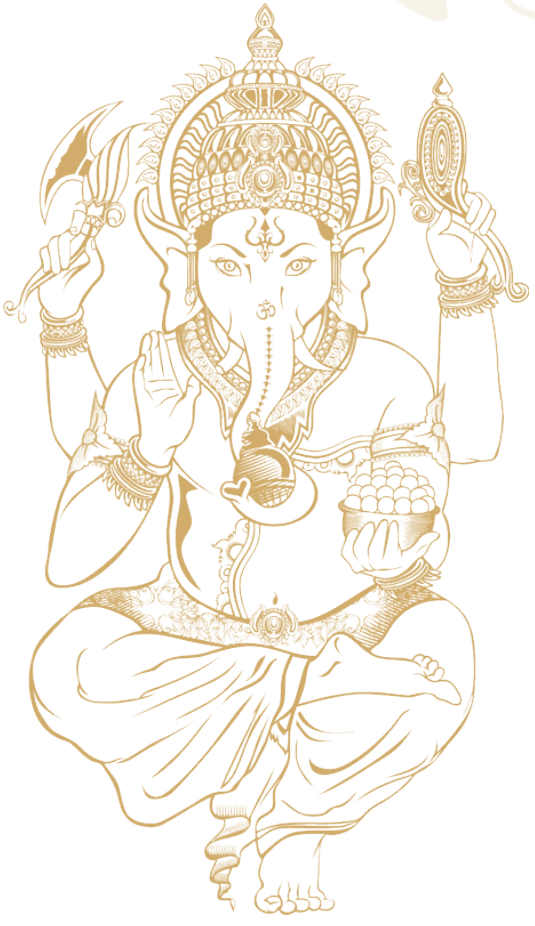

Ramnik jain

Akansha jain

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121346801

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121346801 Date: 21/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/09/1984	जन्म तिथि	28/09/1989
सोमवार	दिन	गुरुवार
घंटे 23:22:00	जन्म समय	19:20:00 घंटे
घटी 42:59:56	जन्म समय(घटी)	32:35:27 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Jaipur
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	26:53:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:50:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:26:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:10:01	सूर्योदय	06:17:49
18:36:44	सूर्यास्त	18:16:31
23:38:21	चित्रपक्षीय अयनांश	23:42:59

वृष	लग्न	मेष
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
कुम्भ	राशि	सिंह
शनि	राशि-स्वामी	सूर्य
पू०भाद्रपद	नक्षत्र	उ०फाल्गुनी
गुरु	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
3	चरण	1
शूल	योग	शुक्ल
बालव	करण	शकुनि
दा-दामोदर	जन्म नामाक्षर	टे-टेस्टी
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला
शूद्र	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	वनचर
सिंह	योनि	गौ
मनुष्य	गण	मनुष्य
आद्य	नाड़ी	आद्य
सर्प	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 4वर्ष 7मा 13दि		23:34:01	वृष	लग्न	मेष	04:31:01	सूर्य 5वर्ष 9मा 19दि	
केतु		24:32:44	सिंह	सूर्य	कन्या	11:41:50	राहु	
25/04/2025		29:28:57	कुंभ	चंद्र	सिंह	27:06:12	18/07/2012	
25/04/2032		20:13:20	वृश्चि	मंगल	कन्या	12:06:00	19/07/2030	
केतु	21/09/2025	07:20:36	सिंह	बुध व	कन्या	04:27:50	राहु	31/03/2015
शुक्र	22/11/2026	09:42:24	धनु	गुरु	मिथु	15:40:40	गुरु	24/08/2017
सूर्य	29/03/2027	18:03:54	कन्या	शुक्र	तुला	24:50:24	शनि	30/06/2020
चन्द्र	29/10/2027	18:46:27	तुला	शनि	धनु	13:49:41	बुध	17/01/2023
मंगल	26/03/2028	06:33:21	वृष व	राहु व	कुंभ	01:38:41	केतु	05/02/2024
राहु	13/04/2029	06:33:21	वृश्चि व	केतु व	सिंह	01:38:41	शुक्र	05/02/2027
गुरु	20/03/2030	16:07:52	वृश्चि	हर्ष	धनु	07:45:59	सूर्य	30/12/2027
शनि	29/04/2031	05:00:56	धनु	नेप	धनु	15:54:24	चन्द्र	30/06/2029
बुध	25/04/2032	06:45:29	तुला	प्लूटो	तुला	19:52:19	मंगल	19/07/2030

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:38:21 चित्रपक्षीय अयनांश 23:42:59

लग्न-चलित

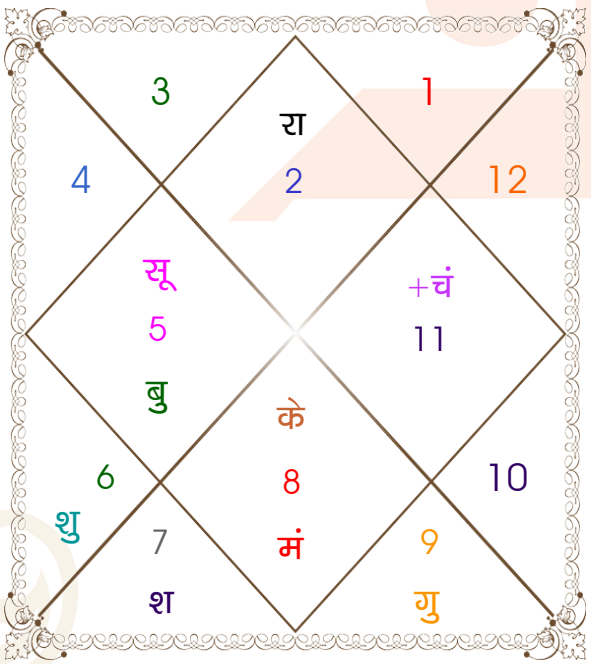

लग्न-चलित

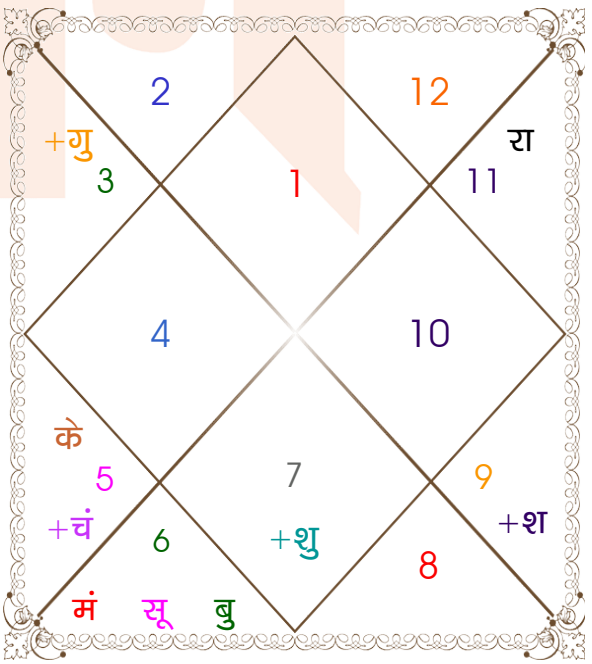

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	गौ	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	सूर्य	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	15.50		

कुल : **15.5 / 36**

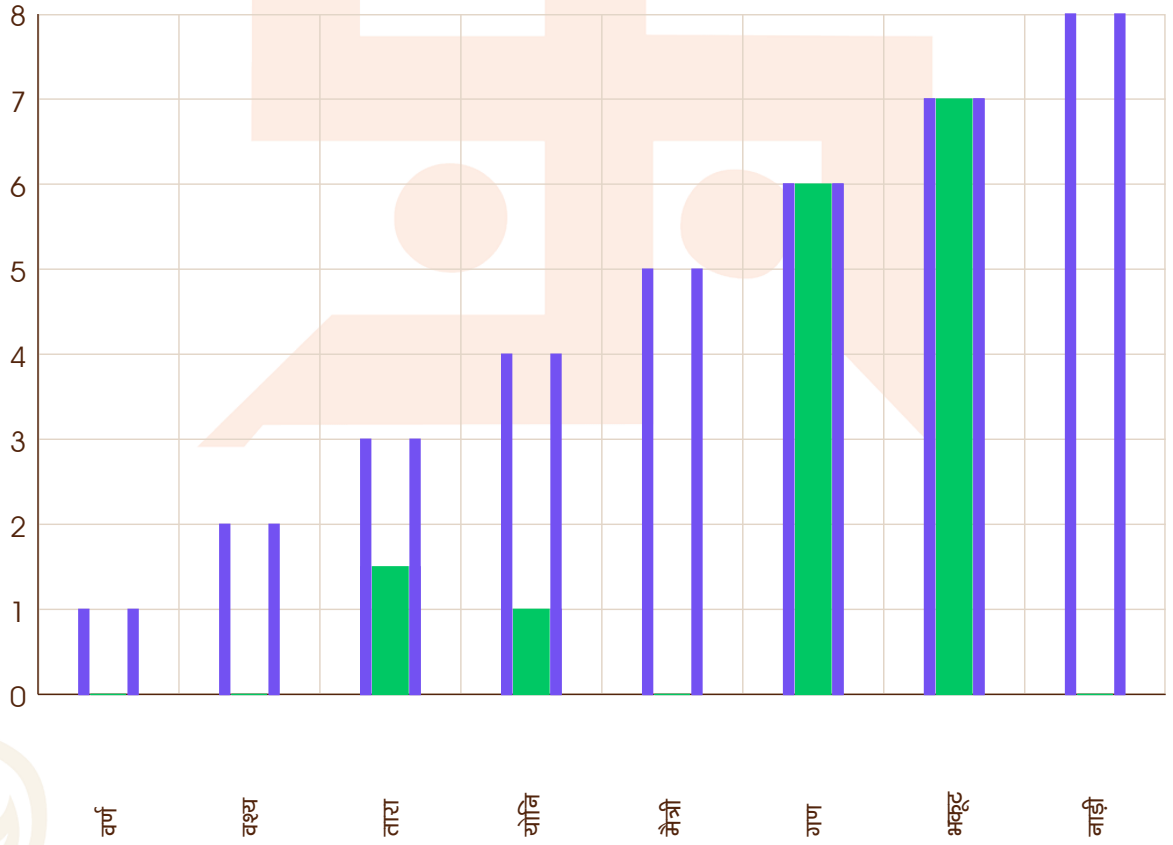

अष्टकूट मिलान

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ंत्उदपा रंपद का वर्ग सर्प है तथा ।ंदीं रंपद का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ंत्उदपा रंपद और ।ंदीं रंपद का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

ंत्उदपा रंपद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढष्;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल ंत्उदपा रंपद कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

।ंदीं रंपद मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ।ंदीं रंपद कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ंत्उदपा रंपद तथा ।ंदीं रंपद में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

त्उदपा रंपद का वर्ण शूद्र है तथा ।ंदीं रंपद का वर्ण क्षत्रिय है। इसमें ।ंदीं रंपद का वर्ण त्उदपा रंपद के वर्ण से नीचा नहीं है अतः यह मिलान उत्तम मिलान नहीं है। जिसके कारण ।ंदीं रंपद अति वर्चस्वशाली होगी तथा सिर्फ आज्ञा देने वाली होगी। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं तर्क-वितर्क का दौर चलता रह सकता है तथा दोनों के बीच कभी-कभी मार-पीट भी हो सकती है। ।ंदीं रंपद का आक्रामक व्यवहार परिवार के सभी सदस्यों का जीना दूभर कर सकता है। परिवार में सुख-शान्ति की स्थापना के लिए त्उदपा रंपद को उसकी हर बात माननी होगी तथा गुलाम की भाँति रहना पड़ेगा।

वश्य

त्उदपा रंपद का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं ।ंदीं रंपद का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है अतः यह मिलान बहुत अशुभ मिलान है। शेर हमेशा मनुष्य के लिए संकट उपस्थित करता है। ये मनुष्य को हानि पहुंचाता है तथा घायल करते हैं व कभी-कभी मारकर खा भी जाते हैं। अतः यह मिलान उचित नहीं है क्योंकि त्उदपा रंपद हमेशा ।ंदीं रंपद से भय महसूस करेगा। ।ंदीं रंपद हमेशा त्उदपा रंपद पर हावी रहेगी, पति के ऊपर वर्चस्व स्थापित करेगी तथा अपने पति को अपनी हर आज्ञा के लिए बाध्य करेगी जो स्वीकार करने योग्य नहीं है क्योंकि इससे विकास एवं समृद्धि प्रभावित होगी। ।ंदीं रंपद हमेशा कोई न कोई समस्या उत्पन्न करती रहेगी जिससे घर एवं परिवार की शांति भंग होगी।

तारा

त्उदपा रंपद की तारा प्रत्यरि तथा ।ंदीं रंपद की तारा साधक है। त्उदपा रंपद की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत त्उदपा रंपद कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप ।ंदीं रंपद को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

त्उदपा रंपद की योनि सिंह है तथा ।ंदीं रंपद की योनि गौ है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की

कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में त्ंउदपा रंपद एवं ।ंर्दी रंपद दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण त्ंउदपा रंपद एवं ।ंर्दी रंपद के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी त्ंउदपा रंपद दवं ।ंर्दी रंपद को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

त्ंउदपा रंपद का गण मनुष्य तथा ।ंर्दी रंपद का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे।ं तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

त्ंउदपा रंपद एवं ।ंर्दी रंपद की राशियां एक दूसरे से सम सप्तक (1/7) हैं। जिसके कारण इस मिलान को अति उत्तम मिलान माना जाता है। ज्योतिष की दृष्टि से यह मिलान अति शुभ है तथा त्ंउदपा रंपद व ।ंर्दी रंपद को शांति, सुख, सौभाग्य, समृद्धि, योग्य संतान एवं चतुर्दिक विकास के अवसरसमय-समय पर मिलते रहेंगे। साथ ही दोनों के बीच असीम प्यार बना रहेगा तथा दोनों हर कार्य में एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

नाड़ी

त्ंउदपा रंपद की नाड़ी आद्य है तथा ।ंर्दी रंपद की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। त्ंउदपा रंपद एवं ।ंर्दी रंपद दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी

नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

त्उदपा रंपद की जन्मराशि वायुतत्व युक्त कुम्भ तथा ।ंदीं रंपद की जन्मराशि अग्नितत्व युक्त सिंह है। वायु एवं अग्नि तत्व में नैसर्गिक समता होने के कारण त्उदपा रंपद और ।ंदीं रंपद के मध्य विषमताओं के साथ साथ स्वभावगत समानताएं भी विद्यमान होंगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में मधुरता होगी जिससे मिलान सामान्यतया अच्छा रहेगा।

त्उदपा रंपद की राशि का स्वामी शनि तथा ।ंदीं रंपद की राशि का स्वामी सूर्य परस्पर शत्रु राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य परस्पर संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति तथा सहयोग भी अल्प ही रहेगा। फलतः परस्पर सुख दुख में सहयोग कम ही प्रदान करेंगे। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे तथा आपस में आलोचनात्मक दृष्टि कोण भी रहेगा जिससे वैवाहिक जीवन में प्रतिकूलता रहेगी।

त्उदपा रंपद एवं ।ंदीं रंपद की राशियां परस्पर सप्तम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही आपस में प्रेम एवं सदभावना की भी वृद्धि रहेगी एवं सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सुख तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर होंगे। इस प्रकार यदि त्उदपा रंपद और ।ंदीं रंपद बुद्धिमता तथा सामंजस्य से कार्य करें तो जीवन में शुभता आ सकती है।

त्उदपा रंपद का वश्य मानव तथा ।ंदीं रंपद का वश्य वनचर है। मानव एवं वनचर में नैसर्गिक शत्रुता तथा विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में विषमता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी अलग अलग रहेंगी। फलतः कामसंबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

त्उदपा रंपद का वर्ण शूद्र तथा ।ंदीं रंपद का वर्ण क्षत्रिय है अतः इनकी कार्य क्षमताएं भी असमान रहेंगी। त्उदपा रंपद किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम से करने में तत्पर रहेंगी परन्तु ।ंदीं रंपद की प्रवृति साहसिक एवं पराक्रमी कार्यो को करने में रहेगी। अतः यदा कदा असंतोष का भाव भी परस्पर रहेगा।

धन

त्उदपा रंपद और ।ंदीं रंपद दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

ंतउदपा रंपद और ाांदीं रंपद दोनों ही आद्य नाड़ी में हुए है। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष बनता है जिससे इनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु इनका जन्म अलग अलग नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः इससे नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है परन्तु ाांदीं रंपद के स्वास्थ्य पर मंगल का दुष्प्रभाव होगा तथा साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए ाांदीं रंपद को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति के दृष्टि से ंतउदपा रंपद और ाांदीं रंपद का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको संतति की प्राप्ति उचित समय पर होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य जन्म का अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनके उचित पालन पोषण करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इनकी कन्या तथा पुत्र संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव काल के प्रति ाांदीं रंपद के मन में अनावश्यक भय की भावना पहले से ही विद्य मान रहेगी जिससे वे मानसिक रूप से अशांति की अनुभूति करेंगी। अतः ाांदीं रंपद को चाहिए कि ऐसी भय की भावना को मन से दूर करें क्योंकि उनका प्रसव बिना किसी विध्न या समस्या के सम्पन्न होगा तथा किसी भी प्रकार से प्रसूति संबधी चिकित्सा की उनको अनावश्यकता नहीं होगी साथ ही उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा सुदंर, स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ रहेंगी। फलतः इससे सास ससुर तथा पति उनसे प्रसन्न रहेंगे।

ंतउदपा रंपद और ाांदीं रंपद बच्चों की उन्नति व्यवहार कुशलता एवं बुद्धिमता से प्रसन्न रहेंगे। साथ ही माता पिता की इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथा उनके सम्मान का हमेशा ध्यान रखेंगे। लेकिन माता की अपेक्षा पिता से उनका विशेष लगाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे। अतः ंतउदपा रंपद और ाांदीं रंपद का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ाांदीं रंपद के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद ाांदीं रंपद अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से ।ंदीं रंपद पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि ।ंदीं रंपद अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

त्ंउदपा रंपद के सास से सामान्यतया मधुर संबध रहेंगे तथा उनके प्रति मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना विद्यमान रहेगी। साथ ही सास को अपनी माता के समान आदरणीया समझेंगे। वह सपत्नीक अवसरनुकूल ससुराल में उनसे मिलने भी जाया करेंगे तथा अपने मन में कभी श्रेष्ठता की भावना नहीं लाएंगे जिससे संबध अनुकूल रहेंगे।

ससुर के साथ में त्ंउदपा रंपद के संबध विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण उनके आपस में मतभेद होंगे लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य की प्रवृति एवं बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा मित्रता की भी भावना रहेगी जिससे एक दूसरे को समझने में सफल रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण त्ंउदपा रंपद के प्रति सकारात्मक रहेगा तथा त्ंउदपा रंपद भी मधुर संबधों को बनाने में नित्य यत्नशील रहेंगे।